केस स्टडी

नंबर 2

काम के साथ सीख

दसमती देवाम ग्राम पंचायत टूटूगुटू की मुखिया हैं जो कि झारखण्ड राज्य के पश्चिमी सिंहभूम जिले में है और झींकपानी प्रखण्ड के अन्तर्गत आता है। दसमती देवाम कम बोलने वाली लेकिन आगे बढ़कर काम करने वाली महिला हैं। अपने पति के साथ मिलकर शुरू से ही दसमती देवाम लोगों की सेवा करती थीं जिसमें जरूरतमंद लोगों की मदद के साथ ही उनके बच्चों को स्कूल भेजना, उन्हें कपड़े देना शामिल था। दसमती देवाम और उनके पति के इस व्यवहार से समाज के लोगों ने उन्हें यह कहकर मुखिया का चुनाव लड़ने के लिये प्रेरित किया कि 'अपने पैसे से आप कब तक समाज की सेवा करोगे?' दसमती देवाम बताती हैं कि चुनाव जीतने के बाद उनके सामने बहुत सी चुनौतियाँ आ गयी हैं। उनके अनुसार 'पहली बार चुन कर आये हैं तो दिक्कत तो हो रही है।'

नामः	दसमती देवाम
उम्रः	36 वर्ष
शिक्षाः	12वीं तक
मुखियाः	2015 से
अनुभवः	समाज सेवा

ग्राम पंचायतः	टूटूगुटू
पंचायत समितिः	झींकपानी
जिलाः	पश्चिमी सिंहभूम
राज्यः	झारखण्ड

काम के अनुभवों को बताते हुये दसमती देवाम बताती हैं कि अपने वर्तमान कार्यकाल में सरकार की योजना के अनुसार उन्होंने बहुत से परिवारों में शौचालय निर्माण का काम (स्वच्छ भारत मिशन के अर्न्तगत) और डोभा निर्माण (महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना या मनरेगा के अन्तर्गत) में सहयोग दिया है । इस दौरान ग्राम पंचायत में पक्की सड़कों और पुलिया का निर्माण भी किया गया है (मनरेगा और 14वें वित्त आयोग की राशि से)। उनके अनुसार गाँव में पीने के पानी की बहुत समस्या है। दसमती बताती हैं कि गाँव के लोग हैण्ड पम्प लगावाने की मांग कर रहे हैं लेकिन 14वें वित्त आयोग में इसके लिये कोई प्रावधान नहीं है। उनके अनुसार गाँव के अधिकांश लोग खेती के काम से आमदनी प्राप्त करते हैं अतः लोग लिफ्ट से सिंचाई कराने की व्यवस्था भी चाहते हैं। दसमती देवाम का मानना है कि बड़ी संख्या में डोभा बन जाने के बाद ग्राम पंचायत में पानी की समस्या कुछ कम हो जायेगी। दसमती देवाम यह भी बताती हैं कि देर से भुगतान मिलने के कारण लोग डोभा बनाने के काम में बहुत रूचि नहीं ले रहे है।

ग्राम पंचायत में डोभा निर्माण

ग्राम पंचायत में अपने द्वारा किये गये कामों को बताते हुये दसमती देवाम उत्साह से बताती है कि उनके मुखिया बनने के बाद ग्राम पंचायत के लगभग 30–40 लोगों को पेंशन योजनाओं (मुख्यतः वृद्धावस्था पेंशन) का लाभ मिलने लगा है। उनके अनुसार ग्राम पंचायत में बहुत से लोगों के बैंक में खाते भी खोले गये हैं। आधार कार्ड के बारे में पूछे जाने पर दसमती बताती हैं कि अभी भी लोग इसका महत्व नहीं समझ पा रहे हैं और इसलिये आधार कार्ड बनवाने में उनकी रूचि कम है। उनका मानना है कि प्रखण्ड और जिले के स्तर से भी इस बारे में बहुत कम मदद मिलती है।

ग्राम पंचायत की व्यवस्था के बारे में बताते हुये दसमती देवाम बताती हैं कि क्योंकि उन्हें सरकारी भाषा में पत्र लिखना नहीं आता है अतः पंचायत सेवक के द्वारा ही पत्र व्यवहार किया जाता है और उन्हीं के द्वारा ग्राम सभा की सारी बैठकों का रिकॉर्ड रखा जाता है। ग्राम पंचायत के पैसों के संबंध में भी हिसाब पंचायत सेवक ही रखते हैं।

अपनी क्षमताओं से जुड़े एक प्रश्न को बताते हुये दसमती देवाम स्वीकार करती हैं कि एक बार ग्राम सभा की बैठक के दौरान स्कूल में अध्यापकों की कमी के बारे मे चर्चा हुई और लोगों ने उनसे इस संबंध में कार्यवाही करने के लिये कहा। किन्तु क्योंकि उन्हें नहीं पता था कि किसके पास जाना है?, किसे पत्र लिखना है?, कैसे पत्र लिखना है? तो उन्हें बहुत दिक्कत हुई। ग्राम पंचायत में आने वाले पैसों और उनको अलग–अलग कामों के लिये बाँटने में भी दसमती देवाम को परेशानी का सामना करना पड़ता है और इन सब कामों के लिये उन्हें पंचायत सेवक पर निर्भर रहना पड़ता है।

मुखिया के रूप में और परेशानियों के बारे में बताते हुये दसमती बताती हैं कि उनकी ग्राम पंचायत में 5 राजस्व गाँव आते हैं। क्योंकि काम की तुलना में पैसे कम आते हैं इसलिये उनको बँटवारा करना बहुत कठिन होता है। ऐसे में हमेशा लोग उनसे कहते हैं कि 'दूसरे सब गाँव में दिया तो मेरे गाँव में क्यों नहीं दिया?'

दसमती देवाम को प्रशिक्षण के लिये राज्य ग्रामीण विकास संस्थान, रांची में जाने का मौका मिला जहाँ उन्हें पंचायती राज, मनरेगा और 14वें वित्त आयोग जैसे विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। 'कैशलेस पंचायत' के बारे में उन्होंने बताया कि प्रखण्ड स्तर पर उन्हें एक दिन का प्रशिक्षण मिला है लेकिन मोबाइल, कम्प्यूटर या अन्य चीजों से बहुत परिचित न होने के कारण उनको प्रशिक्षण में बहुत दिक्कत हुई। दसमती देवाम के अनुसार उनकी इच्छा मनरेगा, 14वें वित्त आयोग इत्यादि के साथ उनके अन्तर्गत योजनाओं को स्वीकृत करने के तरीके, पैसों के विभिन्न योजनओं में बँटवारे, कैशबुक में हिसाब रखने तथा अन्य दस्तावेजों को रखने के संबंध में और ज्ञान लेने की है जिससे उनके द्वारा अपने ग्राम पंचायत के विकास का काम और बेहतर तरीके से किया जा सके।